Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

हिन्दी भाषा का विकास

डॉ0 राजेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
मर्यादा देवी कन्या पी0जी0 कालेज,
बिरगापुर, हनुमानगंज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 4 Issue 1
Page Number: 39-42
Publication Issue :
January-February-2021
Article History
Accepted : 10 Jan 2021
Published : 22 Jan 2021

सारांश

पालि की क्रिया रचना से ही हिंदी में प्रयुक्त होने वाली क्रियाओं का विकास होना प्रारंभ हो गया था, यथा – स्थितः थिअ ('था' रूप में हिंदी में विकास), भवंति हुअंति ('होता' रूप में हिंदी में विकास), भूतः हुआ ('हुआ' या 'हुयी' रूप में हिंदी में विकास)।''

मुख्यशब्दः – हिन्दी, भाषा, विकास, पालि, संस्कृत, परिवार।

विश्व में भाषा–परिवारों की संख्या को लेकर विद्वानो में मतभेद है। भोलानाथ तिवारी और विल्हेल्म फान हुम्बोल्ट ने भाषा–परिवारों की संख्या 13 मानी है। फ्रीडिश म्यूलर ने भाषा–परिवारों की संख्या 100 मानी है। निर्विवादित रुप से चार भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत 18 भाषा–परिवारों को महत्व दिया जाता है।

भौगोलिक क्षेत्र	भाषा–परिवार
यूरेशिया(यूरोप–एशिया)	1.भारोपीय (भारत यूरोपीय) 2. द्रविड. परिवार 3. काकेशी परिवार 4.बुरुशस्की 5. उराल–अल्ताई परिवार 6. चीनी परिवार 7. जापानी–कोरियाई परिवार 8. अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) 9. बास्क परिवार 10. सामी– हामी परिवार
अफ्रीका भूखडं	1 सूदानी 2. जन्तू परिवार 3. होतेंतों–बुशमैनी परिवार
प्रशांत महाासारीय भूखंड	1. मलय–पोलिनेशियाई 2. पापुई परिवार 3. आस्ट्रेलियन परिवार 4. दक्षिण–पूर्व एशियाई परिवार
अमेरिका भूखंड	अमेरिका परिवार

भारोपीय परिवार

भारोपीय परिवार के अन्य नाम हैं– इण्डी–जर्मनिक, भारत–हित्ती परिवार, आर्य परिवार ध्वनि के आधार पर भारोपीय परिवार की दस शाखाओं को 'शतम' (सतम) और केन्तुम' दो वर्गो में बाँटा गया है–

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सतम वर्ग की भाषाएँः 1. भारत–ईरानी (आर्य). 2.बाल्टी स्लाविक. 3. अर्मीनी और 4. अल्बानी (इलीरियन)
केतुम वर्गः 1. जर्मनिक (ट्युटॉनिक) 2. केल्टिक. 3. ग्रीक 4.तोखरी, 5. हिटाइट और 6. इटालिक।
भारत–ईरानी के तीन उपवर्गो का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया है– 1.ईरानी 2. दरद और 3. भारतीय आर्यभाषा

पाली : मध्यकालीन आर्यभाषा की प्रथम अवस्था

सारांश –

पालि भाषा दीर्घकाल तक राज्यभाषा के रुप में भी गौरवान्वित रही है। भगवान बुद्ध ने पालि भाषा में ही उपदेश दिये थे। अशोक के समय में इसकी बहुत उन्नति हुयी। उस समय इसका प्रचार भी विभिन्न देशों में हुआ। लंका, बर्मा आदि देशों की धर्मभाषा के रुप में यह सम्मानित हुयी। डॉ0 ओल्डन बर्ग और ई0 मुलर का मत है कि पालि भाषा का उद्‌गम स्थल कलिंग है। इन दोनों विद्वानों ने कहा कि कलिंग से ही लंका में धर्मोपदेश का कार्य होता रहा। कलिंग के ही लोगों ने जाकर लंका को आवाज दिया और खण्डगिरि के शिलालेखों में पालि का अधिक साम्य है। पालि शब्द की उत्पत्ति विद्वानों ने अलग शब्द से मानी है। 'पल्लि' से पालि शब्द की व्युत्पित्ति हुई। पस्लि का अर्थ है ग्राम। इस प्रकार पालि का अर्थ होगा– 'ग्रामीण भाषा'। कुछ विद्वान 'पल्लि' को प्राकृत का तद्‌भव रूप मानते है। उनके अनुसार प्राकृत से पहले 'पाइल' तथा अंत में पालि हुआ।[1] पालि शब्द की उत्पत्ति 'पाटलि' (पाटलिपुत्र) से भी मानी जाती है। इस संदर्भ में पालि का अर्थ हुआ मगध की भाषा। पालि शब्द का एक संबंध 'पक्ति' से माना गया है। बुद्ध बचनों में जो पंक्तियाँ प्रयुक्त की गई हैं, उन्हें भी 'पालि' कहा जाता है। कुछ विद्वान पालि को बौद्ध साहित्य को पालने वाली या रक्षा करने वाली भाषा मानते हैं।

'पालि' शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में विद्वनों की राय	
विद्वान	व्युत्पत्ति
आचार्य विधुशेखर	पन्ति>पत्ति>पट्टि>पल्लि>पालि
मैक्स वालेसर	पाटलि पुत्र या पालि
भिक्षु जगदीश कश्यप	परियाय>पलियाय>पालियाय>पालि
भंडारकर व वाकर नागल	प्राकृत>पाकट>पाअट> पाउल>पालि
भिक्षु सिद्धार्थ	पाठ>पाळ> पाळि>पालि
कोसाम्बी	पाल्>पालि
उदयनारायण तिवारी	प+णिञ्+लि= पालि

बौद्ध धर्म से संबधित ये तीनों महत्वपूर्ण गंथ पालि में है–

'सुत्त पिटक' बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है। इसके अंतर्गत पाँच निकाय आते हैं– 1. खुद्‌दक निकाय , 2. दीघ निकाय 3. मञ्झिम निकाय, 4 संयुक्त निकाय और 5. अंगुत्तर निकाय। 'विनय पिटक' सघ संचालन के लिये दिये गए शिक्षाओं का संकलन है। विनय पिटक में निम्न ग्रंथ है। 1. महावग्ग. 2 चुल्लवग्ग, 3. पाचित्तिय 4. पाराजिक और 5. परिवार। अभिधम्म पिटक मे धर्मों का विशद् विश्लेषण किया गया है।

''पालि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण ग्रंथ –

ग्रंथ	रचयिता	समय	अन्य बिंदु
अट्ठकथा सहित्या	आचार्य बुद्धघोष	5वीं सदी	–
विसुद्धिमग्ग	आचार्य बुद्धघोष	5वीं सदी	–
कच्चायन व्याकरण	महाकच्चायन	7वीं सदी	–
मोग्गलान व्याकरण	मोग्गलान	–	817 सूत्र
सद्यनीति व्याकरण	अग्गवंश	1154 ई.	27 अध्याय, 134सूत्र''[2]

विसुद्धिमग्ग को बौद्ध सिद्धांतों का कोश भी कहते है। इसे 'सुसन्धिकप्प' और 'कच्चान गंध' भी कहा जाता है। यह पालि का सर्वश्रेष्ठ व्याकरण माना जाता है।

पालि की विशेषताएँ

ध्वनि संरचना संबंधी विशेषताएं

कच्चायन के अनुसार पालि में 41 ध्वनियां है, जिनमें 8 स्वर तथा 33 व्यंजन है। मोग्गलान के अनुसार पालि में ध्वनियों की संख्या 43 है, जिनमें 10 स्वर तथा 33 व्यंजन है।

पालि में प्रयुक्त वर्ण

- स्वरवर्ण
  - ह्रस्वस्वर– अ, इ, उ, ए, ओ
  - दीर्घस्वर–आ, ई, ऊ, ऐ, औ
- व्यंजनवर्ण

क	ख	ग	घ		
च	छ	ज	झ		
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व	स	ह

संस्कृत का 'ऋ' और 'लृ' पालि में समाप्त हो गया। 'श', 'ष', का 'स' हो गया, जैसे– शिष्यः सिस्सो। संयुक्त व्यंजनों में भी अत्यधिक परिवर्तन हुए क्योंकि संस्कृत को जटिलता का एक बड़ा कारण यही हैं सरलीकरण के प्रयासों में संयुक्त व्यंजनों को रूप परिवर्तन होना स्वाभाविक ही था।

पालि की व्याकरणिक संरचना

पालि में संस्कृत के नपुंसक लिंग का लोप होन लगा। पालि में संस्कृत के द्विवचन का भी लोप होने लगा। अधिकतर व्यंजनांत प्रतिपदिक स्वरांत होने लगे। इस प्रक्रिया में अंतिम हलंत व्यंजक हटने लगा या उसमें स्वर जोड़ा जाने लगा, यथा– जगत– जग, राजन् – राज, चल् –चल। विभक्तियों और परसर्गों की जटिलता को दूर करने का प्रयास अन्य तरीकों से भी हुआ। पालि की क्रिया रचना से ही हिंदी में प्रयुक्त होने वाली क्रियाओं का विकास होना प्रारंभ हो गया था, यथा– स्थितः थिअ ('था' रूप में हिंदी में विकास), भवंति हुअंति ('होता' रूप में हिंदी में विकास), भूतः हुआ ('हुआ' या 'हुयी' रूप में हिंदी में विकास)।''[3]

शब्दकोशीय प्रवृत्तियाँ

पालि की शब्द संपदा का मूल आधार स्वाभाविक रूप से तद्भव शब्द हैं। स्थानीय व देशज शब्दों का विकास तेजी से हुआ, यथा – धण (स्त्री), बप्प (पिता), ढेकणी (ढक्कन)।

''धीरे–धीरे काल पाकर वैदिक भाषा के अनेक शब्द विकृत हो गये क्योंकि उनका शुद्ध उच्चारण सर्वसाधारण द्वारा नहीं हो सकता था। एक शब्द को लोग पहले भी विभिन्न प्रकार से बोलते थे, अब इनकी और वृद्धि हुयी। आवश्यकतानुसार अनार्य भाषा के कुछ शब्द भी उसमें मिल गये इसलिये काल पाकर बोलचाल की एक नयी भाषा की सृष्टि हुयी। इसी को पहली प्राकृति कहा गया है। इसी प्राकृति का अन्यतम रुप पालि अथवा मागधी है।''[4] ''कहा जाता है कि पालि भाषा में संस्कृत के शब्दों को बेतरह विकृत होते देखकर आर्य विद्वानों को विशेष चिन्ता हुयी। अतः उन्होनें उसकी रक्षा का प्रयास किया और लौकिक संस्कृति की नींव पड़ी। ..... पालि अथवा मागधी भाषा के विषय में तरह तरह की बातें कही गयी हैं।''[5] ''मागधी अथवा पाली भाषा देवलोक, नरलोक, प्रेतलोक और पशुजाति में सर्वत्र प्रचलित है। इसलिये अपरिवर्तनीय और चिरकाल से समान रुपेण व्यवहृत है।''[6] श्रीमान् विधुशेखर शास्त्रीय अपने पालि प्रकाश में लिखा है– आर्यगण की वेदभाषा और अनार्यगण की साधारण भाषा में एक प्रकार का सम्मिश्रण होने से बहुत से अनार्य शब्द वर्तमान कथ्य वेदभाषा के साथ मिश्रित हो गये।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. एन0टी0ए0 नेट/जे0आर0एफ0 सिरीज दृष्टि, प्रथम संस्करण – 2020, पेज नं0 4।
2. एन0टी0ए0 नेट/जे0आर0एफ0 सिरीज दृष्टि, प्रथम संस्करण – 2020 पेज नं0 4।
3. एन0टी0ए0 नेट/जे0आर0एफ0 सिरीज दृष्टि, प्रथम संस्करण – 2020 पेज नं0 4।
4. हरिऔध ग्रंथावली खंड – 6, भाषा की परिभाषा, संपादन तरुण कुमार।
5. हरिऔध ग्रंथावली खंड – 6, भाषा की परिभाषा, संपादन तरुण कुमार।
6. हरिऔध ग्रंथावली खंड – 6, भाषा की परिभाषा, संपादन तरुण कुमार।